

वशिेष: पोखरण-2: 'बुद्ध की मुस्कान' के 20 बरस

संदर्भ एवं पृष्ठभूमि

वर्ष 1998 में भारत ने आज से 20 साल पहले 11 मई को राजस्थान के पोखरण में परमाणु परीक्षण कर दुनिया को चौंका दिया था। अचानक कथि गए इन परमाणु परीक्षणों से अमेरिका, पाकस्तान सहित सभी देश अचंभति रह गए थे। पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की अगुआई में यह मशिन कुछ इस तरह से अंजाम दिया गया कि अमेरिका समेत पूरी दुनिया को इसकी भनक तक नहीं लगी।

- इससे पहले 1974 में भारत ने अपना पहला परमाणु परीक्षण (पोखरण-1) कर दुनिया को भारत की ताकत का लोहा मनवाया था। इसके बाद अंतरराष्ट्रीय जगत में भारत का स्थान और उसकी साख एक मजबूत राष्ट्र के तौर पर उभरी।

पोखरण-1

18 मई, 1974 की सुबह आकाशवाणी के दलिली केंद्र पर चल रहे फलिमी गीतों के प्रोग्राम को अचानक ही बीच में रोककर उद्घोषणा हुई... कृपया एक महत्त्वपूर्ण प्रसारण की प्रतीक्षा करें। कुछ ही क्षण पश्चात् उद्घोषक का स्वर गूँज उठा... "आज सुबह 8.05 पर पश्चिमी भारत के एक अज्ञात स्थान पर शांतिपूर्ण कार्यों के लिये भारत ने एक भूमिगत परमाणु परीक्षण किया है।" इस परीक्षण से पाँच दिन पहले 13 मई को परमाणु ऊर्जा आयोग के तत्कालीन अध्यक्ष होमी सेठना की देखरेख में भारत के परमाणु वैज्ञानिकों ने परमाणु डेविइस को असेंबल करना शुरू किया था और 14 मई की रात डेविइस को अंग्रेजी अक्षर एल की शकल में बने शाफ्ट में पहुँचा दिया गया था। यह था भारत का पहला परमाणु परीक्षण जो थार मरुस्थल में जैसलमेर से 110 कमी. दूर पोखरण के निकट बुद्ध पूर्णामा के दिन 18 मई को नरिजन कषेत्र में किया गया था। शायद इसीलिये पोखरण-1 को 'बुद्ध की मुस्कान' (Buddha is Smiling) कोड नाम दिया गया था। परीक्षण के लिये पोखरण को इसलिये चुना गया था क्योंकि यहाँ से मानव बसती बहुत दूर थी।

(टीम दृष्टि इनपुट)

पोखरण-2

- आज से 20 साल पहले और पोखरण-1 के लगभग 24 साल बाद भारत ने पोखरण में ही 11 मई और 13 मई 1998 को पांच परमाणु परीक्षण किये।
- इससे पहले 10 मई की रात को योजना को अंतिम रूप देते हुए इस ऑपरेशन को 'ऑपरेशन शक्ति' नाम दिया गया।
- 11 मई को कथि गए पहले परीक्षण ने पूरी दुनिया को हैरान कर दिया। अचानक कथि गए इन परमाणु परीक्षणों से अमेरिका, पाकस्तान समेत कई देश दंग रह गए थे।
- इस ऑपरेशन को पूरा किया गया था तत्कालीन प्रधानमंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार और डीआरडीओ के प्रमुख डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के नेतृत्व में, जो बाद में देश के राष्ट्रपति बने।
- 11 मई को हुए परमाणु परीक्षण में 15 किलोटन का वखिंडन (Fission) उपकरण और 0.2 किलोटन का सहायक उपकरण शामिल था।
- इन परमाणु परीक्षणों के बाद जापान और अमेरिका सहित कई बड़े प्रमुख देशों ने भारत पर वभिनिन प्रकार के प्रतबिंध लगा दिये।
- तब एकमात्र इजराइल ही ऐसा देश था, जसिने भारत के इस परीक्षण का समर्थन किया था।
- 11 मई, 1998 को कथि गए परमाणु परीक्षण के उपलक्ष्य में इस दिन (11 मई) को आधिकारिक तौर पर भारत में 'राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस' के रूप में घोषित किया गया।

जवाब में बना पाकस्तान का परमाणु बम

इन परीक्षणों के ठीक 17 दिन बाद पाकस्तान ने 28 व 30 मई, 1998 को चगाई-1 व चगाई-2 के नाम से अपने परमाणु परीक्षण किये।

उल्लेखनीय है कि पाकस्तानी परमाणु बम के सूत्रधार पूर्व प्रधानमंत्री जुल्फिकार अली भुट्टो ने जब 70 के दशक में इन पर काम शुरू किया था तो इसे इस्लामी बम का नाम दिया था। 1971 में भारत के हाथों युद्ध में पराजय और बांग्लादेश की स्थापना के बाद जुल्फिकार अली भुट्टो ने पाकस्तान की सत्ता संभाली थी। बाद में 5 जुलाई, 1977 को उनके सेनाध्यक्ष जनरल ज़िया उल हक ने उन्हें प्रधानमंत्री के पद से हटाकर रावलपिंडी जेल में बंद कर दिया था तथा 4 अप्रैल, 1979 को फाँसी दे दी थी। जेल में बंद भुट्टो ने एक कतिब लिखी थी, जसिका नाम था 'इफ आई एम असेसनिटेड'। इसमें उन्होंने वसितार से बताया था कि किस तरह पाकस्तानी बम की शुरुआत हुई। इसी कतिब में एक स्थान पर उन्होंने लिखा है... 'हम घास खाएंगे, लेकिन बम ज़रूर बनाएंगे।'

(टीम दृष्टि इनपुट)

पूर्ण गोपनीयता और सावधानी बरती गई थी

- अमेरिकी गुप्तचर एजेंसी CIA भारत पर नज़र रखे हुए थी और उसने पोखरण पर नगिरानी रखने के लिये चार उपग्रह तैनात किये थे।
- इस प्रोजेक्ट के साथ जुड़े वैज्ञानिक कुछ इस कदर सतर्कता बरत रहे थे कि वे एक-दूसरे से भी कोड भाषा में बात करते थे और एक-दूसरे को छद्म नामों से बुलाते थे।
- परीक्षण वाले दिने सभी को सेना की वरदी में परीक्षण स्थल पर ले जाया गया था ताकि गुप्तचर एजेंसी को लगे कि सेना के जवान ड्यूटी दे रहे हैं। 'मसिाइलमैन' अब्दुल कलाम भी सेना की वरदी में वहाँ मौजूद थे।
- तड़के लगभग 3 बजे परमाणु बमों को सेना के 4 ट्रकों के ज़रिये ट्रांसफर किया गया। इससे पहले इन्हें मुंबई से भारतीय वायु सेना के विमान से जैसलमेर एयर बेस लाया गया था।
- वैज्ञानिकों ने इस मशिन को पूरा करने के लिये रेगिस्तान में बड़े गड्ढे खोदे और इनमें परमाणु बम रखे गए। इन गड्ढों पर बालू के पहाड़ बनाए गए जिनसे मोटे-मोटे तार बाहर निकले हुए थे।
- जब वसिफोट किया गया तो आसमान में रेत का गुबार उठा और वसिफोट की जगह पर एक बड़ा गड्ढा बन गया। इससे कुछ दूरी पर खड़ा 20 वैज्ञानिकों का समूह पूरे घटनाक्रम पर नज़र रखे हुए था।
- पोखरण परीक्षण रेंज पर 5 परमाणु बमों के परीक्षणों से भारत पहला ऐसा परमाणु शक्ति संपन्न देश बन गया, जिसने परमाणु अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर नहीं किये थे।
- परीक्षण के बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बहारी वाजपेयी ने घोषणा की थी, 'आज, 15.45 बजे भारत ने पोखरण रेंज में तीन भूमिगत परमाणु परीक्षण किये।'
- प्रधानमंत्री स्वयं परीक्षण स्थल पर मौजूद थे और 'मसिाइलमैन' अब्दुल कलाम ने परीक्षण सफल होने की घोषणा की थी।

परमाणु आपूर्तकिर्त्ता समूह क्या है?

लगभग सभी प्रमुख अंतरराष्ट्रीय संगठनों/समूहों की सदस्यता भारत को मलि चुकी है, लेकिन परमाणु आपूर्तकिर्त्ता समूह (Nuclear Suppliers Group-NSG) की सदस्यता के लिये लंबे समय से पर्यासरत रहने के बावजूद चीन के सक्रिय वरिध के कारण भारत इस समूह का सदस्य नहीं बन पाया है।

- चीन अंतरराष्ट्रीय परमाणु व्यापार को नयित्तरति करने के उद्देश्य से 48-सदस्यीय एनएसजी के वसितार के लिये समान मानदंड-आधारित दृष्टिकोण का समर्थन करता है।
- भारत ने 2008 में एनएसजी की सदस्यता के लिये आवेदन किया था, लेकिन इस पर अभी तक कोई नरिणय नहीं लिया गया है।
- इसका लक्ष्य परमाणु सामगरी, तकनीक एवं उपकरणों के नरियात को नयित्तरति करना है।
- परमाणु हथियार बनाने के लिये इसतेमाल की जाने वाली सामगरी की आपूर्त से लेकर नयित्तरण तक सभी इसी के दायरे में आते हैं।
- एनएसजी परमाणु प्रौद्योगिकी और हथियारों के वैश्विक नरियात पर नयित्तरण रखता है।
- एनएसजी यह भी सुनिश्चित करता है कि परमाणु ऊर्जा का उपयोग केवल शांतपूरण उद्देश्यों के लिये ही किया जाए।
- उल्लेखनीय है कि इसका गठन 1974 में भारत के परमाणु परीक्षण की प्रतकिरियास्वरूप किया गया था।

(टीम दृष्टि इनपुट)

क्यों ज़रूरी थे 1998 में परमाणु परीक्षण?

यह वह समय था जब दुनिया में परमाणु अप्रसार संधि को लेकर चर्चाएं जोरों पर थीं। देश के प्रमुख परमाणु वैज्ञानिक अनलि काकोडकर के मुताबिक वह समय भारत के लिये फैसेले की घड़ी थी। अगर भारत बिना परमाणु शक्ति बने सीटीबीटी पर हस्ताक्षर कर देता, तो फरि उसे परमाणु परीक्षण करने का मौका कभी नहीं मलिता; और यदि भारत हस्ताक्षर करने से मना करता तो उससे पूछा जाता कि वह परमाणु हथियारों पर पाबंदी से पीछे क्यों हट रहा है।

लगाए गए थे प्रतबिंध

आज जसि प्रकार अमेरिका के नेतृत्व में पश्चिमी देश ईरान के परमाणु कार्यक्रम को मुद्दा बनाकर उसके खलिफ प्रतबिंध लगाते-हटाते रहते हैं, ठीक उसी प्रकार पोखरण-2 के बाद भारत पर भी प्रतबिंधों की बाढ़ सी आ गई थी। इस परीक्षण के बाद भारत के सामने कई मुसीबतें एक साथ आ गईं और आर्थिक, सैन्य प्रतबिंध लगाकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उसे अलग-थलग कर दिया गया। भारतीय वदिश नीति निरिधारकों के लिये यह एक बड़ी चुनौती थी, जसिका काफी लंबे समय तक सामना करना पड़ा।

भारत के प्रधानमंत्री का पत्र अमेरिकी राष्ट्रपति के नाम

परमाणु परीक्षण के तुरंत बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बहारी वाजपेयी ने अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति बिलि क्लिंटिन को पत्र लिखा था, 'पछिले कई साल से भारत के इर्द-गर्दि सुरक्षा संबंधी माहौल, वशिषकर परमाणु सुरक्षा से जुड़े माहौल के लगातार बगिड़ने से मैं चतिति हूं। हमारी सीमा पर एक आक्रामक परमाणु शक्ति संपन्न देश है...एक ऐसा देश जसिने 1962 में भारत पर हमला कर दिया था। हालाँकि उस देश के साथ पछिले एक दशक में भारत के संबंध सुधर गए हैं, लेकिन अविश्वास की स्थिति बनी हुई है, जसिकी मुख्य वज़ह अनसुलझा सीमा विवाद है।' भारत के खलिफ अमेरिका प्रतबिंध न लगाए, इस ओर संकेत करते हुए भारतीय प्रधानमंत्री ने बिलि क्लिंटिन को लिखा था, 'हम आपके देश के साथ अपने मैत्री और सहयोग की कदर करते हैं। मुझे लगता है कि भारत की सुरक्षा के प्रत हमारी चति को आप समझ पाएंगे।'

(टीम दृष्टि इनपुट)

लेकिन अमेरिका वही सोच रहा था, जसिका अंदेशा पहले से ही था...प्रतबिंध।

- परमाणु परीक्षण के फौरन बाद अमेरिका ने वदिश सचिवि स्तर की वार्ता को सस्पेंड कर दिया।
- दो वर्षों के दौरान अमेरिका ने लगभग 200 से ज्यादा कंपनियों को प्रतबिंधों की सूची में डाला।
- इस सूची में परमाणु ऊर्जा विभाग, डिफेंस रसिर्च एंड डेवलपमेंट ऑर्गेनाइजेशन (डीआरडीओ) और डिपार्टमेंट ऑफ स्पेस की कंपनियों का नाम शामिल

था।

- इनके साथ ही कई ऐसी नज्दी फरमों को भी प्रतर्बिधति कर दयिा गया जो उनके साथ पहले से काम कर रहे थे।
- उस वक़्त की सबसे पहली और बड़ी चुनौती भारत के सामने यही थी कि अंतरराष्ट्रीय असंतोष को कम करके अमेरिका के वशिवास में आए अंतर को कैसे कम कयिा जाए।

परीक्षण क्योँ? और उनके बाद प्रतर्बिधता

- भारत पर परमाणु अप्रसार संधिपर हस्ताक्षर करने का दबाव बढ़ गया था
- अंतरराष्ट्रीय जगत में भारत का पक्ष मज़बूती से सामने रखना
- वशिवासनीय न्यूनतम सुरक्षा उपायों के लयिे ये परीक्षण कयिे गए
- पड़ोसी देशों से बढ़ती सुरक्षा चुनौतियों के लयिे आवश्यक हो गया था परीक्षण करना
- न्यूनतम भयादोहन और खुद की सुरक्षा के लयिे ज़रूरी था ऐसा करना
- वैज्ञानिकों और सेना का मत था कि परमाणु शक्ति हासलि कयिे बनिा शत्रु को रोकना संभव नहीं हो पाएगा
- 1962 में चीन और 1965 एवं 1971 में पाकसि्तान से युद्ध के बाद देश की सुरक्षा के लयिे यह आवश्यक हो गया था
- युद्ध की स्थिति में भारत पहले परमाणु अस्त्रों का प्रयोग नहीं करेगा
- गैर-परमाणु राष्ट्रों के खलिाफ परमाणु अस्त्रों का इस्तेमाल नहीं कयिा जाएगा
- भारत भविष्य में कयिे जाने वाले परमाणु परीक्षणों पर अस्थायी रोक लगाएगा

परमाणु अप्रसार संधिकयिा है?

- परमाणु अप्रसार संधि (Non Proliferation Treaty-NPT) परमाणु हथियारों का वसितार रोकने और परमाणु तकनीक के शांतपूरण ढंग से इस्तेमाल को बढ़ावा देने के अंतरराष्ट्रीय प्रयासों का एक हसििसा है।
- एनपीटी 1970 में अस्ततिव में आई थी और अब तक संयुक्त राष्ट्र संघ के 188 सदस्य देशों ने इसके पक्ष में समर्थन दयिा है।
- इस संधिपर हस्ताक्षर करने वाले देश भविष्य में परमाणु हथियार वकिसति नहीं कर सकते।
- भारत, पाकसि्तान, इज़राइल, उत्तरी कोरयिा और दक्षणि सूडान संयुक्त राष्ट्र के ऐसे सदस्य देश हैं, जिन्होंने एनपीटी पर हस्ताक्षर नहीं कयिे हैं।
- हालाँकि ये देश शांतपूरण उद्देश्यों के लयिे परमाणु ऊर्जा का इस्तेमाल कर सकते हैं, लेकिन इसकी नगिरानी अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (IAEA) के पर्यवेक्षक करते हैं।

बगि 5 कलब

इस संधिको जब 1970 में लागू कयिा गया तो इसका उद्देश्य परमाणु हथियारों को उन पाँच देशों तक सीमति रखना था, जो यह स्वीकार करते थे कि उनके पास ऐसे हथियार हैं। ये पाँच देश थे--अमेरिका, तत्कालीन सोवयित संघ (वर्तमान रूस), चीन, ब्रिटिन और फ़्राँस। हालाँकि चीन और फ़्राँस ने इस संधिपर 1992 में हस्ताक्षर कयिे थे। ये पाँच 'परमाणु हथियार संपन्न' राष्ट्र संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्य हैं और इस संधि के तहत इस बात से बंधे हुए हैं कि 'गैर-परमाणु' देशों को न तो हथियार देंगे और न ही इन्हें हासलि करने में उनकी मदद करेंगे।

भारत क्योँ नहीं करता इस पर हस्ताक्षर?: भारत लंबे समय से पाँच देशों के इस परमाणु एकाधिकार की आलोचना करता रहा है और इसी के वरिध में इस पर हस्ताक्षर करने से इनकार करता रहा है।

नक्षिर्ष: हाल ही में 1998 के परमाणु परीक्षण पर एक फलिम भी बनी है... 'परमाणु: द स्टोरी ऑफ पोखरण'। इससे पता चलता है कि पोखरण-2 का स्वतंत्र भारत के इतिहास में कयिा महत्त्व है। इस परमाणु वसिफोट ने भारत को वशि्व में बतौर परमाणु संपन्न राष्ट्र स्थापति कर दयिा था। भारत के महान वैज्ञानिक और पूर्व राष्ट्रपति अबदुल कलाम का कहना था कि 'सपने वे नहीं जो सोते हुए देखे जाएं, बल्कि सपने वे हैं जो इंसान को सोने न दें।' डॉ. कलाम के नेतृत्व में ही भारत ने अपना दूसरा परमाणु परीक्षण कयिा था। अपने वैज्ञानिकों की दक्षता और कड़ी मेहनत की वज़ह से आज भारत की गनिती परमाणु शक्ति संपन्न देशों में होती है। भारत की परमाणु शक्ति संपन्नता कसिी देश को धमकाने के लयिे नहीं, बल्कि देश की सुरक्षा के लयिे है, जसिे शायद ही कभी इस्तेमाल कयिा जाए। लेकिन परमाणु बम बनाकर भारत ने यह ज़रूर साबति कर दयिा है कि वह कसिी से कम नहीं है।